



क्रियायोग सन्देश



केवल 'परब्रह्म' का अस्तित्व है क्रियायोग का अभ्यास

झूसी, प्रयागराज। हमारे जीवन का उद्देश्य 'परब्रह्म की अनुभूति करना' है। इसलिये क्रियायोग का अनवरत अभ्यास करना मानव जीवन का लक्ष्य है।

क्रियायोग के अभ्यास से हम अनुभव करते हैं कि परब्रह्म, दृष्टि व अदृष्ट जगत के रूप में प्रकाशित हो रहे हैं। क्रियायोग अभ्यास करने के लिये हम परब्रह्म के निकटतम साकार अस्तित्व में एकाग्रता का अभ्यास करते हैं। सिर से पैर तक की अनुभूति ही ईश्वर की निकटतम साकार अस्तित्व की अनुभूति है, यह साकार अनुभूति निराकार अनुभूति के साथ उसी तरह संयुक्त है जिस तरह दहकती आग के साथ आग की गर्मी। एकाग्रता के इस अभ्यास को क्रियायोग का अभ्यास कहते हैं। योगावतार लाहिड़ी महाशय ने कहा है: 'क्रियायोग ईश्वर का अद्वृत रूप है।' हम इस विचार से अच्छी तरह परिचित हैं कि हमें भगवान की तलाश के लिए किसी उपकरण, टेक्नीक या उपाय की आवश्यकता है। क्रियायोग एक सरलतम, श्रेष्ठतम उपाय है। क्रियायोग से हमें अभी अनुभव करना है कि क्रियायोग, क्रियायोग करने वाला और ईश्वर एक है।



निर्माता, निर्माण का तरीका और निर्माण, तीनों तीन नहीं हमें क्रियायोग के विज्ञान को अधिक से अधिक सीखने बल्कि एक हैं। भगवान् सभी रूपों में प्रकट हो रहे हैं। और सीखाने की प्रबल प्रयत्न की आवश्यकता है। इस इसलिए क्रियायोग और ईश्वर के बीच कोई दूरी नहीं है प्रकार प्रयत्न करने पर हम भी क्रियायोग के अभ्यास के सिद्ध परिणामों का अनुभव कर सकेंगे। इसलिए,

क्रियायोग का 'अधिक और अधिक' अभ्यास करते रहें। क्रियायोग का अर्थ है ईश्वर की उपस्थिति का अभ्यास करना। जब तक हमें सत्य की अनुभूति न हो तब तक क्रियायोग का अभ्यास अधिक से अधिक करते रहें। शीघ्रता से हमें अनुभव करना चाहिए कि भगवान् परमाणु और अणु बन गए हैं, और वही बनस्पति जगत, पशु जगत, मानव जगत, देवदूत और पूरे ब्रह्मांड के रूप में प्रकाशित हैं। फिर, हम समझ सकेंगे कि ब्रह्मांड की रचनायें लुका-छिपी के एक हर्षित नाटक की तरह हैं। हम रचनाओं के अनूठे नृत्य के एक उत्साही पर्यवेक्षक होंगे, कभी दिखाई देंगे और कभी गायब हो जाएंगे। रचनाओं के परिवर्तनों के इस आध्यात्मिक लुका-छिपी को शिव का अनूठा नृत्य कहा जाता है। सत्य की अनुभूति करते ही हम स्वभाव से शांत और अहिंसक बन जाते हैं। हमारी अगली ज़िम्मेदारी हमारे चारों ओर दुनिया के सभी देशों में शांति और अहिंसा की इस चेतना को प्रसारित करना है। भारत चारों ओर के राष्ट्रों को शांति और अहिंसा की किरणें बिखेरने के लिए जाना जाता था। इसलिए, यह भारत माता के रूप में जाना जाता था। आइए हम एक बार फिर, सभी देशों के लिए चेतना के आंदोलन की इस यात्रा को शुरू करें। फिर याद करिये कि यह सब आसानी से क्रियायोग के सम्यक विस्तार से सम्भव है।

God Alone - Kriya Is God - More and More – Singularity

The aim of our lives is to realize and experience "God Alone". This means that we live each moment with the highest principle – "God has become All" (ekoham bahushyam). We begin this practice by concentrating on the place closest to us – our head to toes. Feel each and every perception from the top of our head to the tip of our toes as the manifestation of God – "God Alone". We should accept all perceptions with greatest honour and respect because God has become all changes that we perceive. This is known as the practice of Kriyayoga.

Yogavatagar Lahiri Mahasaya has

said : "Kriya Is God". We are well-acquainted with the idea that we need some tool or technique to seek God – Kriyayoga. However, we have yet to instill within our consciousness that the creator, the tool/method of creation and the creation are one. There is no distance between creator, creation and tool of creation. God has manifested in all forms. Therefore, there is no distance between Kriyayoga and God – "Kriya Is God". With accessibility of the greatest proven tool – Kriyayoga – manifested for humanity to know God (Infinite Power, Knowledge & Peace and Immortality), we need to

learn and practice the science of Kriyayoga more and ever more. In this way, we too can experience the proven results of the practice of Kriyayoga Science. Therefore, keep practising Kriyayoga "More & More".

Practising Kriyayoga means to practise presence of God. Keep practising more and more until we realize "Singularity" – that God has become atoms and molecules, plant kingdom, animal kingdom, human beings, angels and the whole Cosmos. Then, we will be a blissful observer of the unique dance of creations, appearing and disappearing, like a joyful play of hide-and-seek.

This spiritual hide-and-seek of the changes of creations are referred to as the unique dance of Shiva.

When we have in-depth knowledge and perception of all changes around us and realize Immortality in nature, we will become peaceful, calm and non-violent in nature. Then, our next responsibility becomes to radiate this consciousness of peace and non-violence all around us and in all nations of the world. India was known to radiate rays of peace and non-violence to the nations all around. Hence, it was once known as Mother India. Let us once again, begin this journey of movement of consciousness to all nations everywhere, to bring the highest good for all Cosmos.



He who practices Kriyayoga Overcomes all obstacles perm

क्रियायोग के नियमित अभ्यास मनुष्य द्वापर्वे जगत की समस्त बाध सम्पूर्ण रूप से प्राप्त कर ले